सर्वप्रथम मैं अपने शोध निर्देशक डॉ0 आलमगीर अली अहमद जी के प्रति सहृदय प्रणयावनत आभार इस उद्देश्य से प्रकट करता हूँ, कि जिन्होंने अपना शिष्यत्व प्रदान कर व्यक्तित्व में गुरुत्व प्रदान किया। जिनकी इस महती कृपा के अभाव में यह महान कार्य सम्पन्न ही नहीं हो सकता। वास्तव में व्यक्तित्व में गुरुत्व, गुरु प्रदत्त है, उनके अवदान को इस पंक्ति के साथ समर्पित करता हूँ कि– 'तेरा तुझको अर्पण क्या लागत मेरा'।

प्रथम भाव अर्पण 'प्रथम एवं प्रकृति प्रदत्त गुरु, मॉ एवं पिता (पूजनीय नीला सिंह एवं श्रद्धेय डा0 अरविन्द सिंह) जी को है। जिन्होंने अज्ञ (अ से ज्ञ तक वर्णमाला) सिखाकर विज्ञ बनाने का प्रथम सोपान रचा एवं विपरीत परिस्थितियों में धैर्य एवं सकारात्मकता का बीजतत्त्व जो मैंने अपनी दादी मॉ पूज्य सुमित्रा सिंह, श्रद्धेय जे0पी0 सिंह एवं एल0पी0 सिंह जी से प्राप्त किया उसी का पुष्पित रुप यह शोध प्रबन्ध है। शोध प्रबन्ध को सीमित समय में पूर्ण करने में स्मरणीय एवं सक्रिय सहयोग त्याग एवं समर्पण की प्रतिमूर्ति पत्नी विनीता कुमारी सिंह अल्पवय एवं मेधावी पुत्रीद्वय संस्कृता, सात्विका एवं पुत्र सौभाग्य कुँवर जिसकी बाल सुलभ किन्तु जागृत पंक्ति– ''मुझे पढ़ाते हैं, आप भी पढ़िये'' का भी है।

'मनुष्य पथ विचलित देवता है' इस उक्ति के सापेक्ष मेरे उद्देश्य के भटकाव को कम करने के लिए तथा शोध प्रबन्ध को सामान्य से उत्तम एवं उत्तम से अतिउत्तम बनाने में क्रम में आने वाले अवरोधों को कम करने तथा विषयगत एवं विषयेत्तर अनौपचारिक मार्गदर्शन प्रदान करने में अग्रजनों ने अपना बेशकीमती समय, ज्ञान का सर्वोत्तम अंश हमें सहज रूप में हमें प्रदान किया उन्हें मैं सूचीबद्ध नहीं कर सकता लेकिन नाम स्मरण न कर मैं अपने आपको असहज पाता हूँ, ऐसे स्वनामधन्य व्यक्तित्व के धनी श्रेष्ठज– डॉ0 लालजी सिंह (वैज्ञानिक, कुलपति काशी हिन्दू विश्वविद्यालय), श्री संन्तोष सिंह (अतिरिक्त **IV** अधीक्षक), श्री शरद कुमार सिंह (मुख्य विकास अधिकारी), डॉ0 विनोद कुमार शर्मा (जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी), प्रो0 अशोक सिंह (हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय), श्री दिव्यकान्त शुक्ला (उपसचिव माध्यमिक शिक्षा), श्री विजयशंकर मिश्र (जिला विद्यालय निरीक्षक), डॉ0 राजदेव दूबे (इतिहासविभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय), प्रो0 अवधेश प्रधान (हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय), श्री संजय सिंह (उप निदेशक नेहरु युवा केन्द्र), डॉ0 ओ0पी0 राय (जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी), प्रो0 शशिलता

सिंह (विभागाध्यक्ष दर्शन, महात्मा गॉधी काशी विद्यापीठ), डॉ0 लाल साहब सिंह (प्राचार्य), श्री सूर्यभान जी (जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी), श्री ओ0पी0 सिंह (वरिष्ठ अभियोजन अधिकारी), प्रो0 रामसकल यादव (भूगोल विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय), श्री स्वामी विपिनानन्द (शक्तेसगढ़ आश्रम) मीरा सिंह, दिनेश सिंह, विजय नारायण सिंह (अध्यापक) हैं। विस्मृतवश चन्द नाम जो शेष रहे हैं उनके लिए मन सदैव क्षमा प्राथी रहेगा।

इस गुरुत्तर कार्य में मेरे मित्रों सहकर्मियों एवं पुरजनों यथा डॉ0 विकास सिंह, इंजी0 आनन्द सिंह, सुश्री सुनीता सिंह, अनिल मिश्र, तज़ीन फातमा, मो0 नज़ीर, डॉ0 बृजलाल (जिला पिछड़ा वर्ग समाज कल्याण अधिकारी, बस्ती), राम आसरे वर्मा (खण्ड शिक्षाअधिकारी), स्कन्द गुप्त (खण्ड शिक्षाधिकारी), रामप्रकाश जी, रविभूषण जी, कुन्दन यादव (पुलिस अधीक्षक), डॉ0 मालविका सिंह, सूबेदार यादव, तरुण यादव, मनोज कुमार, संगीता सिंह, प्रतिभा भारती, सविता, रंजना, ज्योति, स्वाती, नम्रता, समीक्षा, प्रेमशंकर पाण्डेय, अभय सिंह, रामाचरन, रमाकान्त भारती, महेन्द्र यादव, उपेन्द्र विक्रम द्विवेदी (प्रवक्ता), संजय सिंह, सुनील सिंह (बाबा जी) ऋषि सिंह, अलंकार, संयम, सक्षम लालमणि सेठ (प्रवक्ता), श्रीप्रकाश राय जी का अमूल्य सहयोग रहा है। जिसके प्रति आभार व्यक्त कर मैं उऋण तो नहीं हो सकता फिर भी कर्तव्य पालन करुॅगा।

इसके पश्चात शिब्ली नेशनल पी0जी0 कालेज, आजमगढ़ के प्राचार्य डॉ0 अशफर फैजान और हिन्दी विभागाध्यक्ष माननीय डॉ0 निजामुद्दीन के प्रति मैं ह्रदय से आभारी हूॅ एवं साथ ही साथ यहॉ से जुड़े अन्य सभी गुरुजनों एवं शिक्षणत्तेर कर्मियों का भी ह्रदय से आभार प्रकट करता हूॅ क्योंकि उनकी प्रेरणा एवं उत्साहवर्द्धन के फलस्वरुप ही यह शोध कार्य पूर्ण हो सका।

शोध प्रबनध के माध्यम से मेरी अभिव् V ो लिपिवद्ध करने, श्रेष्ठ रुप प्रदान करने तथा समय सीमा का ध्यान देते हुए शीघ्रता प्रदान करने में कम्प्यूटर टाइंपिंग एवं पृष्ठ सज्जा के कार्य में लगे डॉ0 रामकेवल यादव, (सलाहकार, रा0खा0सु0मि0 योजना आजमगढ़), प्रदीप कुमार भारती, नीलकण्ठ यादव को याद करना नहीं भूल सकता।

इस कार्य को गुणवत्ता पूर्ण ढंग से करने में मैंने अनेक ग्रन्थालय यथा हिन्दी भवन, जौनपुर, सयाजीराव गायकवाड ग्रन्थालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, पूर्वान्चल ग्रन्थालय से

यथेष्ठ सहायता ली है इसके लिए हम कर्मचारियों एवं अधिकारियों का विशेष आभार प्रकट करते हैं।

अन्त में मैं उन सभी शुभचिन्तकों एवं आत्मीय बन्धुओं के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष या परोक्ष रुप से शोध कार्य को पूर्ण करने में मेरी सहायता की।

शोध छात्र

(कुँवर पंकज सिंह)
हिन्दी विभाग
शिब्ली नेशनल पी0जी0 कालेज,
आजमगढ़